विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2568, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 15 दिसंबर, 2024, वर्ष 54, अंक 6

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

धम्मारामो धम्मरतो, धम्मं अनुविचिन्तयं।
धम्मं अनुस्सरं भिक्खु, सद्धम्मा न परिहायति॥

धम्मपदपाळि – 364, भिक्खुवग्गो

धर्म में रमण करने वाला, धर्म में रत, धर्म का चिंतन करते, धर्म का पालन करते भिक्षु (साधक) सद्धर्म से च्युत नहीं होता।

सया तैजी

सया तैजी इस युग के प्रथम गृहस्थ विपश्यना आचार्य हुए। उन्होंने अपने उत्तरदायित्व को इस कुशलता और धर्मतापूर्वक निभाया कि हमारे ये दादागुरु हमारे लिए एक आदर्श गृहस्थ विपश्यनाचार्य के रूप में प्रबल प्रेरक बन गये।

सया तैजी (बर्मी उच्चारण सया थेतजी) का जन्म 27 जून 1873 को प्याब्वेजी नाम के एक कृषि प्रधान गांव में हुआ था जो रंगून के दक्षिण में इरावती नदी के दूसरी ओर आठ मील दूर है। उनका बचपन का नाम मौं पो तै था। उनसे छोटे दो भाई और एक बहन थी। जब वे 10 वर्ष के थे तब उनके पिताजी चार बच्चों के लालन-पालन का भार उनकी माँ पर छोड़ कर चल बसे।

उनकी माँ पकौड़े व तवे की टिकिया छोले आदि बेचकर परिवार का भरण पोषण करती थी। बचपन में उन्हें बचे हुए पकौड़े/टिकिया बेचने गांव में भेजा जाता था पर वे अक्सर बिना कुछ बेचे वापस आ जाते थे क्योंकि वे शरम के मारे आवाज देकर अपनी चीजों के प्रति लोगों को आकर्षित नहीं कर पाते थे। इसलिए उनकी माँ दो बच्चों को साथ भेजने लगी; मौं पो तै को पकौड़ों से भरी ट्रे सर पर ले जाने और उनकी बहन को आवाज देने के लिए।

चूंकि उन्हें परिवार के भरण-पोषण में मदद करना था, उनकी विधिवत शिक्षा बहुत कम रही– केवल छः साल की। उनके परिवार के पास कोई खेती की भूमि नहीं थी और वे फसल कटने के बाद खेत में बचे-पड़े धान व डंठलों को इकट्ठा करते थे। एक दिन खेत से घर जाते समय मौं पो ने कुछ छोटी मछलियों को एक सूख रही तलैया में पाया और उन्हें गांव के तालाब में छोड़ने के उद्देश्य से लेकर घर पहुँचे। मछलियों को देखते ही माँ उन्हें पकड़ने और पीटने को तत्पर हुई, लेकिन उनका आशय सुनकर बोली– "साधु, साधु" (अच्छा कहा, अच्छा किया)। उनकी माँ एक सहृदय एवं दयालु महिला थी जो कभी डांट-डपट तो नहीं करती थी लेकिन कोई अकुशल कर्म भी नहीं सहती थी।

चौदह साल की उम्र में वे धान ले जाने वाली बैलगाड़ी के चालक बने। अपनी दिहाड़ी (दैनिक मजदूरी) अपनी माँ को देते थे। उस समय वे इतने छोटे थे कि उन्हें गाड़ी पर चढ़ते-उतरते वक्त पैर रखने के लिए एक खास बक्सा साथ में रखना पड़ता था।

प्याब्वे जी गांव एक समतल उपजाऊ भूमि पर स्थित है जिसकी सिंचाई इरावती नदी से मिलने वाली उपनदियों से होती है। जब चावल के खेत बाढ़ में डूब जाते हैं, तब नौपरिवहन ही एक साधन होता है, यानी, आवागमन का एक साधारण जरिया "संपण" है (लंबी समतल नाव)। मौं पो का दूसरा काम संपण मल्लाह का था। इस छोटे बच्चे को धान ले जाते समय, लगन से काम करते देखकर किसी स्थानीय चावल मिल के मालिक ने 6 रुपये प्रतिमाह वेतन पर मिल में क्लर्क की नौकरी दे दी। इस अवधि में वे मिल में अकेले रहते थे और मटर के पकौड़े, चावल आदि रूखा-सूखा खाकर गुजर बसर करते थे।

शुरू में वे भारतीय चौकीदार या अन्य श्रमिकों से चावल खरीदते थे। उन लोगों ने उनसे कहा कि वे सुअर या मुर्गियों के लिए रखे गये अवशिष्ट चावल [धान के कूटने के बाद इकट्ठा किये जाने वाले जमीन पर गिरे चावल के टुकड़े (कनी)] से अपना निर्वाह करें। मौं पो ने यह कह कर इनकार किया कि वे मालिक की अनुमति के बिना चावल नहीं लेंगे। मालिक ने जब यह सुना तो अनुमति दे दी। उनके श्रद्धावान और निष्ठावान कामगार होने के कारण संपण और बैलगाड़ी के मालिक चावल देने लगे थे। इस वजह से उन्हें अवशिष्ट चावल अधिक दिन नहीं खाना पड़ा। फिर भी वे अवशिष्ट चावल इकट्ठा करते रहे और उन निर्धन गांववासियों को देते रहे जो चावल खरीद नहीं पाते थे।

एक साल होते-होते उनका वेतन दस रुपये तक बढ़ गया था और फिर दो साल बाद पंद्रह हो गया था। मिल का मालिक उन्हें अच्छे चावल खरीदने के लिए पैसे देने लगा और प्रतिमाह एक सौ टोकरी धान मुफ्त में कुटवाने की अनुमति भी दी। उनका वेतन बढ़ाकर पच्चीस रुपया हो गया जिससे उनकी माँ को बहुत सहायता मिली।

प्रचलित प्रथा के अनुसार सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह मा म्हिन से हो गया। उनकी पत्नी एक संपन्न भूमिधर किसान एवं धान के व्यापारी की तीन पुत्रियों में से एक थी। बर्मी प्रथा के अनुसार वे अपनी पत्नी के माँ-बाप के यहां संयुक्त परिवार में रहने लगे। उनके दो बच्चे हुए– एक बेटा और एक बेटी। उनकी पत्नी की छोटी बहन मा यिन कुँआरी ही रही और एक छोटा व्यापार भी सफलता से करने लगी। आगे चल कर अपनी ध्यान साधना करने तथा सिखाने में ऊ पो तै को सहायता इन्हीं से मिली थी।

मा म्हिन की बड़ी बहिन मा खिन ने कोकाए से शादी की थी और मौं न्युन्ट नामक पुत्र को जन्म दिया। कोकाए खेती बाड़ी और व्यापार को संभालने लगे। मौं पो तै, जिन्हें अब ऊ पो तै या ऊ तै (श्री तै) पुकारा जाता था, ने मिलकर धान के व्यापार को बहुत आगे बढ़ाया।

बचपन में ऊ तै को "सामणेर" बनने का अवसर नहीं मिला था (सामणेर की दीक्षा लेना म्यंमा में एक सामान्य और महत्त्वपूर्ण प्रथा है)। उनका भतीजा मौं न्युन्ट जब 12 साल की उम्र में सामणेर बना तब वे भी सामणेर बन गये और बाद में कुछ समय के लिए फिर से बने। तेईस साल के होने पर वे एक गृहस्थ आचार्य सया न्युन्ट से ध्यान सीखने गये, जिनसे उन्होंने आनापान सीखा और इसका अभ्यास सात वर्ष तक किया।

ऊ तै और उनकी पत्नी के अनेकों मित्र और संबंधी उसी गांव में रहते थे। इस कारण से कई चाचा, भतीजे-भतीजियों, चचेरे भाईयों और ससुराल पक्ष

के लोगों अर्थात ऊ तै के घर वाले भी आ गये और सब एक साथ सौहार्दपूर्ण तथा संतोषजनक रूप से सुखपूर्वक जीवन जीने लगे। गांव का शांत और सुखी जीवन 1903 में हैजा के प्रकोप से भग्न हो गया। कई गांव वाले कुछ ही दिनों में मर गये और कई धीरे-धीरे। इनमें ऊ तै का पुत्र और यौवनावस्था में कदम रख रही पुत्री (कहते हैं उसने इनकी बाहों में प्राण छोड़े) भी शामिल थे। उनका बहनोई कोकाए भी अपनी पत्नी के साथ बीमारी का शिकार हुआ और भतीजी भी (जो उनकी पुत्री के साथ खेलती थी)।

अमरत्व की खोज

इस विपत्ति ने ऊ तै को गहरा सदमा पहुँचाया और उनका मन अशांत हो गया। उन्होंने इस दुःख से मुक्ति पाने का मार्ग खोजने हेतु अपनी पत्नी, साली मा यिन और अन्य संबंधियों से अमरत्व की खोज में जाने के लिए अनुमति मांगी।

बड़े उत्साह के साथ वे पूरे म्यंमा में जगह-जगह भटके। एकांत साधना हेतु पहाड़ियों और अरण्य विहारों में गये। गृहस्थ एवं भिक्षु दोनों प्रकार के आचार्यों से शिक्षा ग्रहण की। अंत में वे अपने प्रथम आचार्य सया न्युन्ट के सुझाव के अनुसार भदंत लैडी सयाडो से मार्गदर्शन लेने, उत्तर की ओर मोञ्ज्वा गये। उनके भ्रमण में उनके साथ एक श्रद्धालु साथी एवं अनुयायी ऊ न्यो भी था।

इन वर्षों में उनकी आध्यात्मिक खोज के दौरान, उनकी पत्नी और मा यिन दोनों प्याब्वेजी में ही रहकर खेती संभालती रहीं। प्रारंभ के कुछ साल वे कुशल क्षेम जानने घर जाया करते थे लेकिन जब उन्होंने पाया कि परिवार संपन्न हुआ जा रहा है तो वे निरंतर ध्यान में लग गये। कुल सात वर्ष उन्होंने लैडी सयाडो के साथ गुजारे। इस दौरान उनकी पत्नी और साली परिवार की खेती से होने वाली आय में से उनकी सहायता करती रही।

सात साल बाद वे ऊ न्यो के साथ अपने गांव लौटे, पर अपनी पूर्व जीवन की गृहस्थी में नहीं गये। आते समय भदंत लैडी सयाडो ने उनसे कहा था कि वे लगन के साथ अभ्यास करके समाधि (ध्यान) और पञ्ञा (प्रज्ञा, प्रत्यक्ष परम ज्ञान) बढ़ाते जायँ ताकि धीरे-धीरे सिखाना भी शुरू कर सकें।

उनके कहे अनुसार वे प्याब्वेजी जाते ही सीधे परिवार के खेत पर स्थित "साला" शाला, पाही (फार्म हाउस) में चले गये। इस "साला" का उपयोग वे धम्म कक्ष के रूप में करते थे। यहां वे निरंतर ध्यान में मग्न हो गये। इस एकांत साधना के दौरान, दिन में दो बार भोजन बनाने के लिए एक महिला को रखा जो शाला के समीप ही रहती थी।

ऊ तै ने शुरू के एक साल इसी तरह गुजारे। उन्होंने ध्यान में त्वरित प्रगति की और अंत में उन्होंने अपने आचार्य के मार्गदर्शन की आवश्यकता का अनुभव किया। वे लैडी सयाडो से तो संपर्क नहीं कर पाये पर उन्हें पता था कि उनके घर की आलमारी में उनकी कुछ पुस्तकें हैं। इसलिए उन दीपनियों को देखने वे वहां गये।

इतने साल बाहर रहने के बावजूद घर में वापस नहीं लौटने के कारण उनकी पत्नी और साली मा यिन उनसे नाराज थीं। पत्नी ने तो तलाक तक के बारे में सोच लिया था। जब ऊ पो तै घर की ओर आ रहे थे तब दोनों बहनों ने निश्चय किया कि वे न तो सम्मान प्रकट करेंगी और न स्वागत करेंगी। पर जब वे द्वार पर खड़े हुए तब दोनों अपने आपको स्वागत करने से नहीं रोक पायीं। कुछ देर बात होने के बाद ऊ पो तै ने क्षमायाचना की और उन दोनों ने दे भी दी।

दोनों ने उन्हें चाय-भोजन के लिए निमंत्रित किया। उन्होंने किताबें लीं और पत्नी को समझाया कि उन्होंने अब आठ शील लिये हैं और गृहस्थ जीवन में वापस नहीं आयेंगे। अब वे दोनों भाई-बहन की तरह रहेंगे। पत्नी और साली ने उन्हें सुबह के भोजन के लिए प्रतिदिन आने का निमंत्रण दिया और खुशी से उनकी सहायता करने को तैयार हुईं। उन्होंने उन दोनों की उदारता के लिए आभार प्रकट किया और कहा कि उन्हें धम्म दान देकर ही वे उनके अहसानों का बदला चुका पायेंगे।

उनकी पत्नी के चचेरे भाई ऊ बा सो और अन्य संबंधी उनसे मिलने और बात करने आये। दो सप्ताह बाद ऊ तै ने कहा कि उनका ज्यादा समय भोजन के लिए आने-जाने में व्यतीत हो रहा है, इसलिए मा म्हिन और मा यिन मध्याह्न का भोजन शाला में ही भेजने लगीं। प्रारंभ में गांव वाले उनसे शिक्षा ग्रहण करने से कतराते रहे। उन लोगों ने उनकी लगन का गलत अर्थ निकाला था। उनका ख्याल था कि वे विपत्ति के मारे और गांव से दूर रहने के कारण विचलित हो गये हैं। लेकिन धीरे-धीरे उनके वार्तालाप तथा आचरण से वे लोग समझ गये कि अब ऊ तै बदले हुए व्यक्ति हैं और उनका जीवन धम्म के अनुरूप है।

विपश्यना सिखाना

ऊ तै के कुछ मित्रों और संबंधियों ने उनसे अनुरोध किया कि वे उन्हें ध्यान सिखायें। ऊ बा सो खेत और घर की जिम्मेदारियों को संभालने के लिए आगे आये। ऊ तै की बहन और भांजी ने भोजन बनाने की जिम्मेदारी ली।

1914 में, इकतालीस साल की उम्र में, ऊ तै ने पंद्रह लोगों के वर्ग को आनापान सिखाना शुरू किया। सभी साधक "साला" में ही रहते थे और उनमें से कुछ पुराने साधक बीच-बीच में घर जाते थे। ऊ तै अपने साधकों को तथा बाहर के उत्साही व्यक्तियों को धम्म प्रवचन देते थे। उनके श्रोताओं को ये प्रवचन इतने विद्वतापूर्ण लगते थे कि वे यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि ऊ तै के पास सैद्धांतिक ज्ञान की कमी है।

ऊ तै की पत्नी और साली की उदार आर्थिक सहायता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से ऊ तै के धम्म कक्ष में आने वाले सभी साधकों की भोजनादि की आवश्यकताओं की आपूर्ति होती थी। यहां तक कि साधना में आये मजदूरों को वेतन भी दिया जाता था।

एक वर्ष ध्यान सिखाने के बाद, 1915 में ऊ तै अपनी पत्नी, साली और अन्य परिवार के सदस्यों को लेकर मोञ्ज्वा लैडी सयाडो का दर्शन करने गये जो उस समय 70 वर्ष के हो गये थे। जब ऊ तै ने अपने ध्यान के अनुभव और उनसे संचालित शिविरों के बारे में बताया तब उसे सुनकर लैडी सयाडो बहुत प्रसन्न हुए।

इस भेंट के समय ही लैडी सयाडो ने अपनी छड़ी ऊ तै को देते हुए कहा— "मेरे होनहार शिष्य, मेरी यह छड़ी लो और जाओ। इसे संभाल कर रखो। मैं यह तुम्हें दीर्घायु बनाने के लिए नहीं दे रहा। इसे मैं एक भेंट स्वरूप दे रहा हूं ताकि तुम्हारे जीवन में कुछ अनहोनी नहीं घटे। तुम सफल रहो। आज से लेकर तुम्हें छः हजार लोगों को "रूप एवं नाम" का (शरीर और चित्त का) धम्म सिखाना है। तुम्हारे पास शाश्वत धम्म है, इसलिए तुम सासन (बुद्ध शासन) की कीर्ति फैलाओ। मेरे स्थान पर तुम "सासन" का गुणगान करो।"

दूसरे दिन लैडी सयाडो ने अपने विहार के सभी भिक्षुओं को बुलाया। उन्होंने ऊ तै से अनुरोध किया कि वे 10-15 दिन वहां रहकर भिक्षुओं को सिखायें। उन्होंने भिक्षु संघ से कहा "सब ध्यान से सुनो। यह उपासक मेरा परम शिष्य ऊ पो तै है। दक्षिण म्यंमा से आया है। यह मेरी ही तरह ध्यान सिखाने में समर्थ है। तुम में से जो कोई ध्यान साधना करना चाहे, इनसे सीखे। और तुम, दायक (भिक्षु का भक्त जो उनके भोजन, वस्त्र, दवा जैसी आवश्यकताओं का दायित्व लेता है।) तै, मेरे स्थान पर धम्म का जय केतु फहराओ। यह काम मेरे ही विहार से प्रारंभ करो।"

धम्म के मशाल-वाहक

तदनन्तर ऊ तै ने पच्चीस शास्त्रविद भिक्षुओं को विपस्सना साधना सिखायी। तभी से वे सया तैजी के नाम से जाने जाने लगे, (सया का अर्थ आचार्य है, "जी" हिंदी में जी जैसा ही सम्मानसूचक है।)

लैडी सयाडो ने तो सया तैजी को अपनी जगह धम्म सिखाने के लिए प्रोत्साहित किया, मगर अपने सैद्धांतिक ज्ञान में अपूर्णता को लेकर सया बड़े हतोत्साहित थे। लैडी सयाडो की अनेक रचनाओं में से कुछ तो उन्हें कंठस्थ थीं और वे शास्त्रों के अनुसार धम्म की व्याख्या इस तरह करने में सक्षम थे कि कोई विद्वान सयाडो (भिक्षु आचार्य) भी विरोध न कर सकें। और फिर लैडी सयाडो के आदेश पर उनके स्थान पर धम्म की शिक्षा देना एक पवित्र कर्तव्य था। तथापि सया तैजी आशंकित थे। श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उन्होंने अपने गुरु से कहा, "आपके शिष्यों में मैं ही शास्त्रों को बहुत कम जानता हूं। आपके आदेशानुसार विपस्सना सिखाने के द्वारा "सासन" की सेवा एक नाजुक और कठिन कार्य है। इसलिए

भदंत, मेरा यह अनुरोध है कि जब भी मुझे स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो, आप अपनी सहायता और मार्गदर्शन दें। कृपया मुझे आप अपना सहारा दें और जब भी जरूरत पड़े, मुझे डांटें।"

लैडी सयाडो ने यह कहते हुए आश्वासन दिया— "मैं अपनी मृत्यु के समय भी तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।"

सया तैजी और उनके संबंधी दक्षिणी म्यंमा में स्थित अपने गांव लौट आये। लैडी सयाडो के इस गुरुतर आदेश का पालन करने के बारे में परिवार के अन्य सदस्यों से बात की। सया तैजी ने पूरे म्यंमा का दौरा करने के बारे में सोचा। उन्हें लगा कि वे इससे ज्यादा लोगों के संपर्क में आयेंगे। परंतु उनकी साली ने कहा– "यहां आपके पास धम्म-कक्ष है और साधकों के लिए भोजन की व्यवस्था करके हम सब आपकी मदद कर सकते हैं। आप यहीं रहकर क्यों नहीं शिविर लेते? कई लोग हैं जो विपस्सना सीखने यहां आयेंगे।" वे राजी हो गये और प्याब्वेजी में ही रहकर अपनी शाला में नियमित शिविर चलाने लगे।

उनकी साली ने जैसे भविष्यवाणी की थी, कई लोग आने लगे और ध्यानाचार्य के रूप में सया तैजी विख्यात हो गये। वे साधारण किसानों, मजदूरों से लेकर पालि ग्रंथों के विद्वानों को भी सिखाने लगे। यह गांव रंगून से दूर नहीं था, जो उस समय अंग्रेजों की राजधानी थी, इसलिए ऊ बा खिन जैसे सरकारी कर्मचारी और शहरी लोग भी आने लगे।

जैसे-जैसे अधिकाधिक साधक आने लगे, उन्होंने ऊ न्यो, ऊ बा सो और ऊ औं न्यून्ट जैसे पुराने अनुभवी साधकों को सहायक आचार्य बना दिया। साल-दर-साल केंद्र तरक्की करता गया और शिविरों में भिक्षु, भिक्षुणियों सहित 200 साधकों तक की संख्या होने लगी। "साला" में पर्याप्त जगह नहीं होने के कारण अधिक अनुभवी साधक अपने घर पर ही ध्यान करते थे और केवल प्रवचनों के लिए शाला में आते थे।

लैडी सयाडो के केंद्र से वापस आने के बाद सया तैजी एकांत एवं मौन में अकेले रहने लगे और दिन में एक ही बार भोजन करते थे। भिक्षुओं की ही तरह वे भी अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों की चर्चा नहीं करते थे। पूरे म्यंमा में उन्हें अनागामी (वह, जिसने निर्वाण से पूर्व की अवस्था प्राप्त कर ली) माना जाता था, पर उन्होंने कभी भी नहीं बताया कि वे स्वयं या उनके शिष्य किस स्तर पर हैं। म्यंमा में वे "अनागामी सया तैजी" के नाम से जाने जाते थे।

उन दिनों गिने चुने गृहस्थ ही विपस्सना के आचार्य बनते थे। फलस्वरूप सया तैजी को कुछ ऐसी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था जो भिक्षुओं को नहीं करना पड़ता। जैसे, कुछ लोग उनका विरोध इसलिए करते थे कि वे शास्त्रों के उतने विद्वान नहीं थे। सया तैजी ने इन आलोचनाओं की परवाह नहीं की और साधना से मिलने वाले परिणामों को स्वयं अपना बयान करने दिया।

एक बार उनके खेतों में काम करने वाले मजदूरों ने उनकी सज्जनता का गलत फायदा उठा कर फसलों में से उन्हें हिस्सा नहीं दिया। यद्यपि खेती की देखभाल से उन्होंने विरक्ति ले ली थी तथापि वे अपने मार्ग से हटकर उसको सुलझाने चले गये ताकि उनके विरोधी लोभवश अपनी अकुशल प्रवृत्ति को और मजबूत न करते रहें।

अपने स्वयं के अनुभव और लैडी सयाडो की दीपनियों पर निर्भर हो, उन्होंने तीस साल तक सभी आने वालों को ध्यान सिखाया। उन्होंने हजारों लोगों को विपस्सना सिखाने का लक्ष्य 72 वर्ष की आयु में, 1945 में पूरा किया। उनकी पत्नी का देहांत हो गया था, उनकी साली भी लकवा ग्रस्त हो गयी थी और स्वयं उनका स्वास्थ्य भी क्षीण हो रहा था। इसलिए उन्होंने पचास एकड़ जमीन धम्म-कक्ष के निर्वाह के लिए अलग रखकर अपनी शेष सारी संपत्ति भांजे-भतीजों और भांजी-भतीजियों को बांट दी।

उनके पास बीस भैंसे थे, जिन्होंने उनके खेतों को सालों तक जोता। उन्हें उन लोगों के सुपुर्द कर दिया जिन पर यकीन था कि उनके साथ दया से व्यवहार करेंगे। उन भैंसों को इस दुहाई के साथ भेज दिया– "तुमने मुझे भरपूर लाभ पहुँचाया, तुम्हारे कारण चावल उपजा, अनाज आया। अब तुम अपने काम से मुक्त हो। तुम्हें इस तरह के जीवन से मुक्ति मिले और अगला भव अच्छा मिले।"

सया तैजी अपना इलाज कराने और वहां रहने वाले अपने शिष्यों से मिलने रंगून गये। उन्होंने अपने कुछ शिष्यों को बताया कि वे रंगून में ही देहत्याग करेंगे और उनका दाह-संस्कार उस जगह पर हो जहां पहले कभी किसी का दाह-संस्कार नहीं हुआ हो। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी अस्थियों को किसी पवित्र स्थान पर नहीं रखें, क्योंकि वे अब तक सभी प्रकार के संयोजनों, (मानव को बांधने वाले बंधनों) से मुक्त नहीं हुए, अर्थात वे अरहंत नहीं हुए हैं।

उनके शिष्यों में से किसी ने श्वेडगोन पगोडा की उत्तरी ढलान की ओर "आजनिगन" पर एक ध्यान केंद्र की स्थापना की थी। उसके समीप एक पनाहघर था जिसे दूसरे विश्वयुद्ध के समय बमबारी से बचने के लिए बनाया गया था। सया तैजी इसका उपयोग ध्यान करने के शून्यागार के रूप में करते थे। रात में वे अपने किसी सहायक आचार्य को साथ रखते थे। रंगून से उनके कई शिष्य जिनमें महालेखाकार ऊ बा खिन और आयकर आयुक्त ऊ सान थैं शामिल थे, जब भी समय मिलता, मिलने आते रहे।

जो भी उनसे मिलने आये, उन्हें वे लगन के साथ साधना करने; ध्यान सीखने आने वाले भिक्षु, भिक्षुणियों का आदर करने; काया, वाणी और चित्त पर संयम रखने; प्रत्येक कर्म से भगवान बुद्ध का सम्मान करने का उपदेश देते थे। उन्हें हर शाम को श्वेडगोन पगोडा जाने की आदत थी, पर जमीन में बनायी गयी गुफा में बैठने के कारण एक सप्ताह बाद उन्हें जुकाम के साथ ज्वर हो गया। डाक्टरों के इलाज के बावजूद उनकी स्थिति बिगड़ती गयी। उनकी स्थिति नाजुक होते ही उनके सारे भांजे-भतीजे प्याब्वेजी से रंगून पहुँच गये थे। हर रात उनके लगभग पचास शिष्य एक साथ ध्यान में बैठते थे। इन सामूहिक साधनाओं में सया तैजी कुछ बोलते नहीं थे, पर मौन रहकर ध्यान करते थे।

एक रात करीब दस बजे उनके पास कई शिष्य थे (ऊ बा खिन वहां नहीं आ पाये)। वे चित्त लेटे हुए थे और उनका श्वास ऊंचा और दीर्घ हो गया था। दो शिष्य ध्यानपूर्वक देख रहे थे और बाकी साधना में थे। ठीक ग्यारह बजे श्वास और गहरी हो गयी थी। प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के लिए पांच मिनट लगने लगे थे। इस प्रकार के तीन श्वास के बाद सांस पूर्णतया रुक गया और सया तैजी का देहांत हो गया।

उनके शरीर का दाह संस्कार श्वेडगोन पगोडा की उत्तरी ढलान की ओर ही किया गया और बाद में सयाजी ऊ बा खिन और उनके शिष्य वहां एक छोटे पगोडा का निर्माण किये। पर इस अनुपम आचार्य का सही स्मारक तो यह सच्चाई है कि लैडी सयाडो से उन्हें प्राप्त धम्म को समाज के प्रत्येक वर्ग में फैलाने का महान कार्य आज भी निर्विघ्न रूप से चल रहा है।

(सयाजी ऊ बा खिन जरनल से साभार)

क्रमशः.....

मंगल मृत्यु

1. 87 वर्षीय श्री हरिलाल साहू ने गत 27 अक्टूबर, 2024 को 'धम्म उत्कल' विपश्यना केंद्र पर शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। वे 'धम्म उत्कल', खरियार रोड (उडीसा) के केंद्र-आचार्य थे और 1999 से लगातार सहायक आचार्य के रूप में श्रीलंका सहित भारत के अनेक केंद्रों पर जाकर अपनी सेवाएं दीं और बहुत पुण्य अर्जित किया। धम्मपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए वे निब्बानलाभी हों, धम्मपरिवार की यही मंगल कामना है।
2. प्रो. डॉ. गंगा प्रसाद पाठकजी ने 91 वर्ष की पकी उम्र में गत 25 अक्टूबर, 2024 को दिल्ली में शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। उन्होंने सन १९८८ से विपश्यना साधना शुरू की थी और सन 1999 में दिल्ली यूनिवर्सिटी से रिटायर्ड होते ही पूर्ण रूप से धर्मसेवा में जुड़ गए और शीघ्र ही सहायक आचार्य नियुक्त हुए। शिविरों में सेवा देने के अतिरिक्त उन्होंने विपश्यना विशोधन विन्यास की हिंदी पुस्तकों के संपादन में भी बहुत अच्छी भूमिका निभायी। बढ़ती उम्र के कारण शारीरिक रूप से संभव न होने पर भी मानसिक रूप से धर्मसेवा से जुड़े रहे। धर्मपथ पर उनकी उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे, धम्मपरिवार की यही मंगल कामना है।

नया निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र "धम्म तपोसागर"

नालगोंडा में घम्म नागाज्जुन विपश्यना केंद्र के पास दीर्घ शिविरों के लिए एक नये केंद्र का निर्माण कार्य आरंभ हो गया है। इसका पूरा विवरण जानने के लिए कृपया निम्न लिंक देखें: https://nagajjuna.dhamma.org/tapo-saagara.html

ऑनलाइन पालि-इंग्लिश सर्टिफिकेट कोर्स-2025

प्रवेश-प्रक्रिया 28 दिसंबर 2024 से 28 जनवरी 2025 तक चलेगी।

आवेदन पत्र– विभिन्न व्हाट्सऐप समूहों एवं निम्न लिंक पर 28 दिसंबर 2024 से उपलब्ध होगा।

कोर्स-डिटेल्स– https://palilearning.vridhamma.org/

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री विनय दहाट, संयोजक क्षेत्रीय आचार्य, विदर्भ, महाराष्ट्र
2. श्री बिष्णु भंडारी, धम्म सुरियो विपश्यना केंद्र, नेपाल के केन्द्र आचार्य की सहायता

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री मोफिदुर रहमान, गुवाहाटी
2. श्री मायिलमुरुगन सेलप्पन, मयिलाडुतुरै, तमिलनाडु
3. Mr. Shiva Bongu, Michigan, U.S.A.
4. Mr. Myung Ho shin, Korea
5. Ms. Sunae Park, Korea
6. Ms. Yi Sun Yung, Korea
7. Mi Gyeong min, Korea

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविरः

1. रविवार 19 जनवरी 2025 को सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि (19-1-1971) एवं माताजी की पुण्य-तिथि (5 जनवरी 2016) के उपलक्ष्य में **महा**शिविर होगा। **Email:** oneday@globalpagoda.org Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **संपर्कः 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)

Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; Email: oneday@globalpagoda.org

'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or Email- *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

दोहे धर्म के

धन्य पड़ोसी देश के, संत और अरहंत।
रक्षित रख सद्धर्म को, मंगल किया अनंत॥
कैसी सुखद सुहावनी, मां बरमा की गोद।
इस गोदी में ही मिला, बोधि धर्म का मोद॥
अनुकंपा हो संत की, मुक्ति द्वार दे खोल।
देख अनित्य असंग हो, पाए नित्य अमोल॥
अंतर में दीपक जला, देख लिया पथ गूढ।
बाहर जग भटकत फिरा, पंथ न पाया मूढ॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरती पर बहती रवै, सुद्ध धरम री धार।
जन जन रो होवै भलो, जन जन रो उद्धार॥
सुद्ध धरम फिर जगत मँह, पूज्य प्रतिस्थित होय।
जन जन रो होवै भलो, जन जन मंगळ होय॥
जो जो द्वेसी धरम रा, द्वेस मुक्त हो ज्याय।
सुद्ध धरम प्रेमी बणै, दुक्ख दूर हो ज्याय॥
क्रोधी त्यागै क्रोध नै, द्रोही त्यागै द्रोह।
जन-मन मँह प्रग्या जगै, दूर हुवै सम्मोह॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2568, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 15 दिसंबर, 2024

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 01 DECEMBER, 2024, DATE OF PUBLICATION: 15 DECEMBER, 2024

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org